

महिला शिक्षिकाओं की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं का अनुभवपरक अध्ययन (जिला— झुन्झुनु (राज) के विशेष सन्दर्भ में)

ममता कुमारी (शोधार्थिनी) शिक्षा विभाग

डॉ मंजू (शोधनिदेशिका) शिक्षा विभाग

Jayoti Vidyapeeth Womens University (JVWU), Jaipur,

सारांश, महिला शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि ये समस्याएं न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती हैं, बल्कि छात्रों के सीखने और स्कूल के माहौल पर भी असर डालती हैं। महिला शिक्षकों को अक्सर कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें लैंगिक भेदभाव, कम वेतन, दोहरी भूमिका (घर और काम), और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं शामिल हैं। जैसे तनाव और बर्नआउट महिला शिक्षकों को अक्सर छात्रों, माता-पिता और स्कूल प्रशासन की अपेक्षाओं को पूरा करने के कारण अत्यधिक तनाव का अनुभव होता है। इसके परिणामस्वरूप, वे बर्नआउट (काम से थकान और निराशा) का शिकार हो सकती हैं। अवसाद और चिंता तनाव और बर्नआउट के कारण, महिला शिक्षकों में अवसाद और चिंता जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं विकसित हो सकती हैं। कम आत्म-सम्मान लैंगिक भेदभाव और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण, महिला शिक्षकों को अपने काम और क्षमताओं पर संदेह हो सकता है, जिससे उनका आत्म-सम्मान कम हो सकता है। लैंगिक भेदभाव महिला शिक्षकों को अक्सर समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है, और उन्हें पदोन्नति के समान अवसर नहीं मिलते हैं। दोहरी भूमिका महिला शिक्षकों को घर और काम दोनों जगह अपनी भूमिकाएँ निभाने में कठिनाई हो सकती है, जिससे उन्हें तनाव और थकान का अनुभव हो सकता है। समाज में महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे घर और बच्चों की देखभाल करें, जिससे महिला शिक्षकों पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। इस शोध पत्र में पाया गया कि महिला शिक्षकों में तनाव, बर्नआउट, चिंता और अवसाद की व्यापकता अधिक है, खासकर उन शिक्षकों में जो कम सैलरी की असंतुष्टि, उच्च तनाव और चिंता विकारों का अनुभव करते हैं।

मुख्य शब्द सामाजिक अपेक्षाएं, महिला शिक्षकों में तनाव, बर्नआउट, चिंता और अवसाद आदि।

प्रस्तावना, अनेको अध्ययनों में पाया गया कि महिला शिक्षकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके मानसिक स्वास्थ्य और काम की संतुष्टि को प्रभावित करती है। शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से महिला शिक्षकों को सशक्त बनाने की आवश्यकता है, ताकि वे अपने अधिकारों के बारे में जागरूक हो सकें और समाज में सक्रिय भूमिका निभा सकें। महिला शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ताकि उनके लिए बेहतर समर्थन प्रणाली स्थापित की जा सके। शिक्षकों को तनाव, बर्नआउट, और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए सहायता प्रदान करना, साथ ही लैंगिक भेदभाव और सामाजिक अपेक्षाओं को संबोधित करना, उनके काम

और जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकता है। महिला शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें काम का दबाव, परिवार और काम के बीच संतुलन, और समाज से मिलने वाले अपेक्षाएं शामिल हैं। इन चुनौतियों का असर उनके मानसिक स्वास्थ्य और काम की गुणवत्ता पर पड़ सकता है। महिला शिक्षकों को अक्सर काम का अत्यधिक दबाव, छात्रों की अपेक्षाएं, और प्रशासनिक कार्यों का सामना करना पड़ता है, जिससे तनाव और बर्नआउट हो सकता है। महिला शिक्षकों को कभी-कभी अपने काम और क्षमताओं पर संदेह हो सकता है, जिससे आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास में कमी आ सकती है। महिला शिक्षकों को अक्सर परिवार और काम के बीच संतुलन बनाने में कठिनाई होती है, खासकर जब उनके बच्चे छोटे हों या परिवार में कोई बीमार हो। महिला शिक्षकों को कार्यस्थल पर भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। महिला शिक्षकों को अक्सर पुरुषों की तुलना में कम आंका जाता है, और उन्हें समान अवसर और वेतन नहीं मिलता है। महिला शिक्षकों से अक्सर घर और परिवार की देखभाल करने की उम्मीद की जाती है, जिससे उनके काम पर असर पड़ सकता है। महिला शिक्षकों को कभी-कभी असुरक्षित महसूस हो सकता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में या देर रात तक काम करने पर। महिला शिक्षकों को कभी-कभी समुदाय से पर्याप्त समर्थन नहीं मिलता है, जिससे उन्हें अकेलापन और अलगाव महसूस हो सकता है। महिला शिक्षकों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए, जैसे कि परामर्श और चिकित्सा।

परिवार के अनुकूल नीतियां

महिला शिक्षकों को परिवार के अनुकूल नीतियां प्रदान की जानी चाहिए, जैसे कि लचीला काम का समय और मातृत्व अवकाश, महिला शिक्षकों को समय प्रबंधन, तनाव प्रबंधन, और संघर्ष समाधान जैसे कौशल सिखाए जाने चाहिए, समुदाय में महिला शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए।

भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ सख्त कानून

भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ सख्त कानून बनाए जाने चाहिए और उनका पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, महिला शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। सरकार, स्कूल प्रशासन, और समुदाय को महिला शिक्षकों के समर्थन के लिए मिलकर काम करना चाहिए, ताकि वे स्वस्थ जीवन जी सकें।

महिला शिक्षिकाओं के सामने आज क्या हैं चुनौतियां?

भारतीय समाज परंपरागत रूप से एक पितृसत्तात्मक समाज है। मगर शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के स्थापित वर्चस्व को चुनौती दे रही हैं, अगर यह बात कहें तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं, तो कई क्षेत्रों में उनको पीछे भी छोड़ रही हैं। महिला शिक्षकों की सशक्त मौजूदगी भारतीय समाज में बड़े बदलाव का संकेत है।

इस बदलाव के साथ ही पुरुषों की मानसिकता और पितृसत्तात्मक सोच में तेजी से बदलाव नहीं आया है, इस कारण से उन्हें विभिन्न तरह की चुनौतियों का सामना कार्यस्थल और परिवार में करना पड़ रहा है। मगर महिलाएं इस चुनौती का बखूबी मुकाबला कर रही हैं और साथ ही साथ आने वाले पीढ़ी के लिए रास्ते को ज्यादा सुगम और कंटक विहीन भी बना रही हैं। हमारे समाज में आज भी महिलाओं के लिए शिक्षण का पेशा सबसे सुरक्षित माना जाता है। मगर उनकी मौजूदगी शिक्षा, चिकित्सा, प्रबंधन, पत्रकारिता, साहित्य और सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ विज्ञान के विभिन्न विधाओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में अपने सफर की शुरुआत के बारे में एक शिक्षिका कहती हैं, “जब मैंने पहली बार नौकरी ज्वाइन की तो आसपास के लोग पूछते थे कि आप काम करती हैं?” मगर धीरे-धीरे समाज में लोगों का नजरिया बदला। अभी तो बड़ी संख्या में महिलाएं शिक्षण के पेशे को चुन रही हैं और सरकारी व निजी दोनों क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। मगर महिला शिक्षकों का यह सफर बिल्कुल आसान कतई नहीं है। महिला शिक्षकों के सामने बहुत सी चुनौतियां होती हैं, जिनका सामना उनको रोजमर्रा की जिंदगी में करना पड़ता है। मसलन लंबा सफर तय करके स्कूल पहुंचना। स्कूल जाने से पहले घर का सारा काम पूरा करना। बच्चों को तैयार करना और बाकी सदस्यों का ख्याल रखना। इस वजह से भी उनको पर्याप्त रूप से पढ़ने और प्रोफेशनल तरीके से आगे बढ़ने में काफी दिक्कत होती है। मिशाल के तौर पर एक स्कूल में इंग्लिश पढ़ाने वाली शिक्षिका का कहना था, “मैं खुद भी अंग्रेजी सीखना चाहती हूँ ताकि बच्चों को अच्छे से पढ़ा सकूँ। मगर घर पर बहुत सारे पारिवारिक काम होते हैं। किताब लेकर बैठना संभव हो ही नहीं पाता।”

महिला शिक्षिकाओं को परिवार का सपोर्ट है जरूरी

बहुत से परिवारों में पढ़ने की संस्कृति नहीं है। संयुक्त परिवार है। बड़े और बुजुर्ग लोगों की सोच पुराने समय वाली है, वहां पर तो शिक्षिकाओं को घर का काम भी करना पड़ता है और स्कूल भी जाना होता है। यानि उनको दोहरी जिम्मेदारी का निर्वाह करना पड़ता है। अगर परिवार की तरफ से सपोर्ट मिल रहा है तो अच्छी बात है। इसके अभाव में तो उनकी व्यथा या तो वे जानती हैं, या फिर उनकी साथी शिक्षिकाएं जो इसी तरह की समस्याओं से रोजाना प्रभावित होती हैं।

भविष्य में महिला शिक्षकों की स्थिति बेहतर होगी क्योंकि बड़ी संख्या में लड़कियां बीएड और एसटीसी की पढ़ाई कर रही हैं। बहुत से परिवार ऐसे भी हैं, जहाँ उनके काम को महत्व नहीं दिया जाता। इसका असर उनके स्कूल में काम करने के उत्साह पर पड़ता है। इस बारे में एक शिक्षिका कहती हैं, “हमें इस काम से खुशी मिलती है। हम अपने बच्चों की जरूरतें पूरी करने में आत्मनिर्भरता है। किसी के सामने हाथ तो नहीं फैलाना है। पूरा दिन घर पर बैठने से बेहतर है स्कूल में बच्चों को पढ़ाना।” स्कूल में कई बार पुरुष स्टाफ के साथ तालमेल बैठाने में दिक्कत आती है क्योंकि पुरुष शिक्षकों के अपने पूर्वाग्रह होते हैं जो काम के दौरान बार-बार दिखाई पड़ते हैं। इसका जिक्र एक बार महिला शिक्षकों के सम्मेलन में सुनने को मिली। वहां महिला शिक्षकों के बीच में मैं इकलौता पुरुष था। उन्होंने बेबाकी के साथ विभिन्न मुद्दों पर आपस में संवाद किया और भविष्य में एक-दूसरे की मदद करने का भरोसा जताया।

किसी भी महिला शिक्षक के लिए एक स्कूल में काम करने के लिए सबसे बुनियादी चीजों में एक शौचालय की मौजूदगी भी है। यह ऐसी स्थिति में होना चाहिए ताकि उसका सम्मान के साथ इस्तेमाल किया जा सके। निजी स्कूलों में तो इस सुविधा की मौजूदगी अच्छी स्थिति में होती है, मगर बहुत से सरकारी स्कूलों में टॉयलेट की स्थिति काफी दयनीय होती है, इसके कारण भी महिला शिक्षकों को परेशानी होती है। जिन स्कूलों में पहली बार महिला स्टाफ की नियुक्ति हुई, वहां के शिक्षकों ने संवेदनशीलता दिखाते हुए ऐसी सुविधा को दुरुस्त करने की पहल की ताकि स्कूल में नए साथी को परेशानी न हो। इस तरह के अच्छे उदाहरण भी जमीनी स्तर पर देखने को मिलते हैं। बालिका शिक्षा के प्रचार-प्रसार और प्रोत्साहन के कारण अभी कॉलेज में बहुत सारी लड़कियां बीएड और एसटीसी का कोर्स कर रही हैं। इनमें से कुछ पार्ट टाइम या फुल टाइम सरकारी और निजी स्कूलों में पढ़ाने का काम भी कर रही हैं। इससे आने वाले दिनों में महिला शिक्षकों के लिए भी एक सोशल सपोर्ट सिस्टम विकसित होगा, जो उनको मुश्किल दौर में मदद करने के लिए आगे आएगा। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी काम करने वाली महिला शिक्षकों के हौसले को सलाम करने का मन होता है।

किसी भी उन्नत राष्ट्र की प्रगति के लिये आवश्यक हैं कि उस राष्ट्र के लोग पुरुष एवं स्त्री दोनों ही शिक्षित हों। प्रायः हमारे देश में यह धारणा है कि शिक्षा का अधिकार एवं उपयोग केवल पुरुषों तक ही सीमित हैं स्त्रियों को केवल कामकाजी महिला एवं बच्चों को जन्म देने वाली मशीन से ज्यादा कुछ नहीं आंका जाता था। परन्तु अब आधुनिक भारत में धारणा बदल गयी हैं अब प्रत्येक परिवार की महिला को शिक्षा ग्रहण करने के लिये भी विभिन्न शिक्षालयों में भेजा जाने लगा हैं आधुनिक समय में जहाँ शिक्षा के विकास में नारी ने कदम रखा वहीं अन्य प्रक्रियाएँ जैसे-औद्योगीकरण, नगरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, लौकिकीकरण, भौतिकवादी विचारधारा एवं आर्थिक स्वतंत्रता आदि ने नारी को परम्पराबद्ध बंधनों से मुक्त करके व्यावसायिक क्षेत्र में ला दिया है, परिणामस्वरूप महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर खुले हैं तथा महिलायें परम्परागत धारणाओं, मूल्यों एवं मान्यताओं को तोड़ कर श्रम बाजार में अपनी क्षमता एवं योग्यता के आधार पर अपना स्थान निर्धारित कर रही है। शिक्षा में तनाव व चिंता महिलाओं में आज एक विशेष समस्या बनकर उभर रही है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार महिलाओं में पुरुषों कि तुलना में उच्च व्यवसायिक तनाव व चिंता का स्तर पाया गया है। 60 प्रतिशत बीमारियों का कारण नौकरी से संबंधित तनाव व चिंता है। अतः यदि शिक्षक महिलाओं को उनके व्यवसायिक तनाव एवं चिंता का ज्ञान हो तो उन्हें किस हद तक इससे उत्पन्न प्रभावों से बचाया जा सकता है।

शोध पूर्व साहित्यिक अवलोकन

नगीना परवीन (2018) ने अपने लेख में लिखा कि हैदराबाद शहर की महिला शिक्षिकाओं में व्यवसायिक तनाव के शोध अध्ययन में ज्ञात किया कि महिला शिक्षिकाओं के उत्तरदायित्वों/कर्तव्यों का स्तर भी तनाव को प्रभावित करता है, इस अध्ययन में नमूने के लिये 180 महिला शिक्षिकाओं को लिया जिसमें से 90 विवाहित तथा 90 अविवाहित थी। इस अध्ययन में पाया गया कि विवाहित महिलाओं में अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा व्यवसायिक तनाव अधिक पाया गया। विवाहित महिलाओं में अधिक तनाव पाये जाने का कारण माँ, पत्नी, गृहणी के रूप में अनेक भूमिकाओं का निर्वाह किया जाना था।

बहल, ज्योति (2019) ने—“ महिला शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में पारिवारिक तनाव की भूमिका का अध्ययन” कर निष्कर्ष स्थापित किया कि महिला शिक्षिकाओं में पारिवारिक समायोजन में असफलता के कारण तनाव उत्पन्न होना पाया गया। महिला शिक्षिकाओं में कार्य स्थल की दूरी तथा कार्यस्थल पर उनका उत्पीड़न का दाम्पत्य जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पाया गया।

लिल्हारे डॉ. रेखा एवं बोरकर डॉ. सुनीता (2020), ने लिपिकीय और परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन के मध्य तनाव एवं चिंता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य लिपिकीय और परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन के मध्य तनाव एवं चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 200 महिला शिक्षिकाओं का चयन किया गया था, जिनमें 100 लिपिकीय वर्ग की महिलाएं व 100 परिवर्तनशील कार्य अवधि में कार्यरत महिलाएं थी। प्रदत्त संकलन हेतु तनाव मापनी व चिंता मापनी का उपयोग किया गया था। शोध का निष्कर्ष था कि लिपिकीय और परिवर्तनीय कार्य अवधि में कार्यरत महिलाओं के कार्य निष्पादन में तनाव एवं चिंता के माध्यों में सार्थक अंतर पाया गया।

एक्टर, एम. एक्टर, एम.जे. (2022) ने 'Motivational Styles in Everyday सपमिश् पुस्तक में तनाव उत्पत्ति के कारणों को उजागर करने के साथ-साथ तनाव को कम करने के तरीकों की व्याख्या भी की है। प्रतिदिन की जिन्दगी में व्यक्ति को प्रोत्साहित करने के तरीके यदि आशा से पूरित, भावनाओं के तथा स्वभाव के अनुरूप हो तो वे निश्चय ही अवसाद को कम करता है।

शोध परिकल्पनाएँ—

परिकल्पना सामाजिक अनुसंधान की प्रथम सीढ़ी है। उपकल्पना से तात्पर्य शोधार्थिनी द्वारा अध्ययन कार्य के पूर्व के बारे में जो काल्पनिक, पूर्वानुमान, विचार किया जाता है, उसे ही उपकल्पना कहते हैं। ये उपकल्पना तथ्यों को एकत्रित करने में सहायक होती है। अर्थात् अनुसंधान कार्य प्रारंभ करने के पूर्व अनुसंधान के कारणों समस्याओं के समाधान एवं परिणाम के बारे में हम जो एक निश्चित आधार बना लेते हैं उसे परिकल्पना या उपकल्पना कहते हैं।

- महिला शिक्षिकाओं में तनाव पाया जाता है।
- विभिन्न शासकीय एवं अशासकीय संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं में तनाव पाया जाता है।
- महिला शिक्षिकाओं को पारिवारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

शोध विधि,

मानव एक जिज्ञासु प्राणी है वह अज्ञात तत्वों का पता लगाने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। सामाजिक घटनायें भी अपने आप में काफी जटिल हैं एक ही घटना के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं उन सभी कारणों को खोज निकालना कोई सरल कार्य नहीं है। जब सामाजिक क्षेत्र की समस्याओं के हल खोजने का व्यवस्थित प्रयास किया जाता है उसे ही सामाजिक अनुसंधान, शोध अन्वेषण या खोज का नाम दिया जाता है। शोध पत्र में महिला शिक्षिकाओं में

व्यवसायिक तनाव की समस्याओं से सम्बन्धित वास्तविक एवं विश्वसनीय आकड़ों को प्राप्त करने के लिये प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ों को एकत्र कर पूर्ण किया गया है। प्राथमिक आकड़े स्वयं कार्य स्थल पर जाकर मूल स्रोतों एवं साक्षात्कार अनुसूची द्वारा एकत्र किये गये हैं। शोधार्थिनी ने इस शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध विधि को प्रयोग किया है। इसी के साथ द्वितीयक आंकड़े बालश्रम से संबंधित विभिन्न प्रकाशित- अप्रकाशित पुस्तकों, शोध पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, शासकीय प्रतिवेदनों आदि से एकत्र कर प्रयोग किये गये हैं।

शोध का मुख्य उद्देश्य, इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार रहे।

- महिला शिक्षिकाओं में तनाव व चिंता को उत्पन्न करने वाले मुख्य कारकों का प्रभाव है।
- महिला शिक्षिकाओं में तनाव व चिंता को कम कर या दूर कर स्वास्थ्यप्रद वातावरण का क्या प्रभाव रहा है।
- महिला शिक्षिकाओं में पारिवारिक तनाव का अध्ययन करना।
- अध्ययन में सम्मिलित महिला शिक्षिकाओं के जीवन की स्थितियों तथा समस्याओं के बारे में पता लगाना।

निष्कर्ष, आज की आर्थिक कठिनाईयों की वजह से महिला शिक्षिकाओं द्वारा नौकरी करने से सामाजिक दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है जैसे अब अधिकांश पति चाहते हैं कि उनकी पत्नियां भी नौकरी करें। वर्तमान की कमरतोड़ मँहगाई और आधुनिकता की दौड़ में कार्यकारी महिलाओं की स्थिति दो नांव में एक साथ पैर रखने के समान है जिसका संतुलन बनाए रखने के लिए महिला शिक्षिकाओं में निरंतर प्रयत्नशील हैं। अतः महिला शिक्षिकाओं के लिए परिवार और नौकरी का सही संतुलन जोखिम भरी चुनौती है जिसे उसने हसकर स्वीकारा और सफलता के साथ निभा रही हैं “ऊषा मल्होत्रा के अनुसार “घर और बाहर का संतुलन आवश्यक है” इसमें दो राय नहीं हैं कि वर्तमान भौतिकवादी एवं सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप महिला शिक्षिकाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है इस परिवर्तन में संतुलन बनाए रखने के लिए महिला शिक्षिकाओं ने दोहरी भूमिका स्वीकारी हैं चाहे इस दोहरी भूमिका के कारण महिलाओं को किन्हीं भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हो, किन्तु फिर भी वह कार्यकारी होना ही पसंद करती हैं, क्योंकि आज सामाजिक जीवन में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं उससे लोगों का जीवन स्तर बढ़ा है खान-पान, रहन-सहन, पहनावा जीवन शैली बदली है, और मानसिक सोच में भी परिवर्तन आया है, आवश्यकताएँ भी बढ़ी हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पुरुष के साथ महिला शिक्षिकाओं का कार्यकारी होना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। हमारा समाज मूल रूप से पुरुष प्रधान रहा है। पहले महिला शिक्षिकाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता न होने के कारण उसकी सामाजिक व पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक नहीं थी। जिसे हर कदम पर एक पुरुष के सहारे की जरूरत होती थी। वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहें हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण के कार्य में तेजी आयी है। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप महिला शिक्षिकाओं के आत्म विश्वास में बढ़ोत्तरी हुयी है। वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी है। एक ओर जहाँ केन्द्र व

राज्यों की सरकारें महिला शिक्षिकाओं के उत्थान की नई-नई योजनाएँ बनाने लगीं हैं। वहीं कई गैर सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिये उनकी आवाज बुलन्द करने लगे हैं। महिला शिक्षिका अब ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है, कि वह अपने अन्दर छिपी अपनी ताकत को सामने लाकर बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

- 1 सक्सेना, एस.सी. (2019), 'महिला शिक्षिकाओं की प्रमुख समस्याएँ एवं सामाजिक सुरक्षा', रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ।
- 2 शर्मा, डॉ. एम.के. (2020), 'भारतीय समाज में नारी', पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
- 3 आहुजा राम (2021), महिला शिक्षिकाओं की सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली।
- 4 डॉ. रानी, आशु (2022) महिला शिक्षिकाओं के विकास कार्यक्रम, ईनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर, पृष्ठ सं. 19
- 5 डॉ. कुलश्रेष्ठ, लक्ष्मी रानी, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर-नवम्बर 1997, पृष्ठ सं. 82
- 6 के.डी. गोगेड, सेक्स डिस्क्रिमिनेशन इन इण्डिया ए क्रिटिक (प्रोस्टीट्यूशन इन इण्डिया), 1995, पृ. सं. 185
- 7 वार्षिक संदर्भ ग्रन्थ भारत-2024, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ.सं. 53